किसलय

(भाग-2)

सातवीं कक्षा की हिंदी पाठ्यपुस्तक

सत्यमेव जयते

LZ8SCM

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित)

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

DIKSHA	**DIKSHA ऐप कैसे डाउनलोड करें ?**
	विकल्प 1: अपने मोबाइल ब्राउज़र पे **diksha.gov.in/app** टाइप करें| **विकल्प 2:** अपने एंड्राइड मोबाइल के Google Playstore पर DIKSHA NCTE खोजें और "डाउनलोड" बटन को दबाएँ |

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल पाठ्य सामग्री कैसे प्राप्त करें

DIKSHA ऐप लॉन्च करें | ऐप अनुमतियों को स्वीकारें | उपयुक्त उपयोगकर्ता प्रोफ़ाइल का चयन करें

1 पाठ्यपुस्तकों में QR कोड स्कैन करने के लिए DIKSHA ऐप में दिए गए QR कोड आइकॉन को टेप करें |

2 डिवाइस को QR कोड की दिशा में इंगित करें और QR कोड के ऊपर केंद्रित करें |

3 सफल स्कैन पर , QR कोड से जुड़ी डिजिटल पाठ्य सामग्री सूचीबद्ध है |

डेस्कटॉप पर DIAL कोड का उपयोग कर डिजिटल पाठ्य सामग्री कैसे प्राप्त करें

1 पाठ्यपुस्तक में QR के निचे 6 अंको का एक कोड रहता है जिसे DIAL कोड कहते हैं |

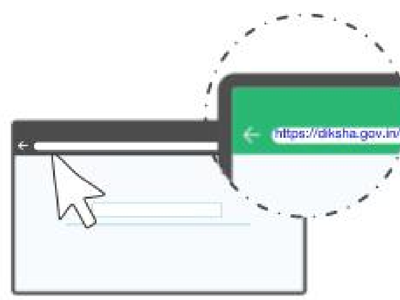

2 ब्राउज़र पर **diksha.gov.in/br/get** टाइप करें |

3 सर्च बार में 6 अंको का DIAL कोड टाइप करें |

4 सभी उपलब्ध पाठ्य सामग्री की सूचि देखिए और किसी भी नए पाठ्य सामग्री को क्लिक करें और देखें |

किसलय

(भाग-2)

सातवीं कक्षा की हिंदी पाठ्यपुस्तक

LZ8SCH

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित)

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

1 मानव बनो

है भूल करना प्यार भी,
है भूल यह मनुहार भी,
पर भूल है सबसे बड़ी,
करना किसी का आसरा,
मानव बनो, मानव जरा।

अब अश्रु दिखलाओ नहीं,
अब हाथ फैलाओ नहीं
हुंकार कर दो एक जिससे,
थरथरा जाए धरा,
मानव बनो, मानव जरा।

उफ, हाय कर देना कहीं,
शोभा तुम्हें देता नहीं,
इन आँसुओं से सींचकर कर दो,
विश्व का कण-कण हरा,
मानव बनो, मानव जरा।

अब हाथ मत अपने मलो,
जलना, अगर ऐसे जलो,
अपने हृदय की भस्म से,
कर दो धरा को उर्वरा,
मानव बनो, मानव जरा।

– शिव मंगल सिंह 'सुमन'

2 नचिकेता

LZRJFX

आज से सहस्रों वर्ष पूर्व महर्षि बाजश्रवा हुए।

महर्षि बाजश्रवा का अधिकांश समय जप-तप में बीता करता था। उनके पुत्र का नाम नचिकेता था।

नचिकेता पितृभक्त बालक था। उसमें दृढ़ता, सत्य और धर्म के प्रति अगाध निष्ठा थी। उसके मुखमण्डल से तेज टपकता था। वह सहिष्णु था। बालक नचिकेता के इन्हीं गुणों के कारण पिता उससे अगाध स्नेह रखते थे। इस तरह नचिकेता पिता के लिए प्राणों से प्यारा बन गया था।

एक बार बाजश्रवा की इच्छा सर्वमेघ यज्ञ करने की हुई। इस यज्ञ में अपना सब कुछ दान कर देने के बाद ही फल की प्राप्ति होती है। इस बात को महर्षि बाजश्रवा अच्छी तरह जानते थे। यही बात उन्होंने अपने पुत्र नचिकेता को भी बताई थी। नचिकेता साधु प्रवृति का बालक था। पिता की इच्छा जानकर उसे बेहद खुशी हुई।

यज्ञ के लिए शुभ तिथि निश्चित की गई। उस दिन सर्वमेघ यज्ञ का शुभारम्भ हुआ। उसमें भाग लेने के लिए दूर-दूर से ब्राह्मण पधारे। नचिकेता ने यज्ञ की एक-एक क्रिया को ध्यान से देखा। सभी क्रियाएँ यथासमय पूर्ण होती गईं। अन्त में सिद्धहस्त ब्राह्मणों ने नारियल की पूर्णाहुति देकर उसे सम्पन्न किया। यज्ञ की समाप्ति पर महर्षि बाजश्रवा को अपना सब कुछ दान में दे देना था। ब्राह्मणों को अच्छा दान मिलने की पूर्ण आशा थी।

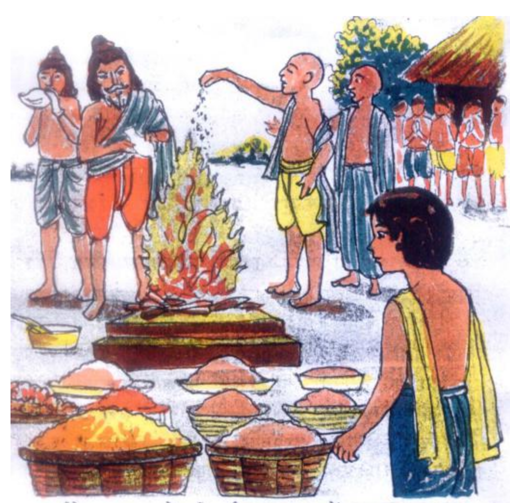

यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद महर्षि बाजश्रवा उठे। अग्नि देवता को नमस्कार करके वे अपनी गोशाला की ओर बढ़े। उनकी गोशाला में अनेक बढ़िया गायें थीं। वे सभी गायों को दान में देने का निश्चय कर चुके थे। परन्तु गोशाला तक पहुँचते-पहुँचते उनका मन लोभ से भर गया। वे

3 पुष्प की अभिलाषा

M11FHK

चाह नहीं मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ ।
चाह नहीं प्रेमी-माला में
बिंध प्यारी को ललचाऊँ ।।

चाह नहीं सम्राटों के शव पर
हे हरि, डाला जाऊँ ।
चाह नहीं देवों के सिर पर
चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ ।।

मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक ।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जाएँ वीर अनेक ।।

-माखनलाल चतुर्वेदी

शब्दार्थ

चाह= इच्छा
सुरबाला= देवकन्या
बिंध=छेदा जाना, छिदकर
सम्राट=जिसके अधीन कई राजा हों।
शव=मृत शरीर
इठलाऊँ= नाज-नखरे करूँ ।

4 दानी पेड़

M1ABJ8

एक पेड़ था। वह एक छोटे लड़के को बहुत प्यार करता था। लड़का रोज पेड़ के पास आता। वह फूलों की माला बनाता, उसके तने पर चढ़ता, उसकी शाखाओं से झूलता और उसके फल खाता। फिर वह पेड़ के साथ लुका-छिपी खेलता। जब वह थक जाता तो पेड़ की छाँव में सो जाता। लड़का पेड़ से बहुत प्यार करता था। पेड़ बहुत खुश था।

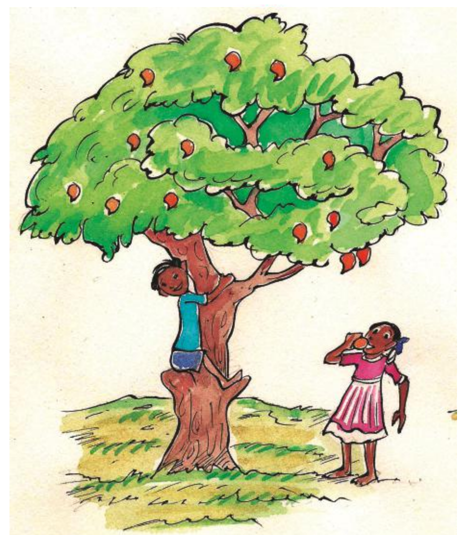

समय बीतता गया। लड़का जवान हो गया। वह अब पेड़ पर खेलने नहीं आता। पेड़ अकेले दुखी होता। जब लड़का एक दिन आया तो पेड़ बहुत खुश हुआ। लड़के ने पेड़ से कहा- "मुझे पैसों की जरूरत है। मैं बहुत सी चीजें खरीदना चाहता हूँ। क्या तुम मुझे कुछ पैसे दे सकते हो?"

पेड़ ने कहा- " पैसे तो मेरे पास हैं नहीं। तुम मेरे फल तोड़ लो और उन्हें बाज़ार में बेच दो। इससे तुम्हें पैसे मिल जाएँगे।"

लड़का सब फल तोड़ कर ले गया। पेड़ अभी भी खुश था।

कई साल के बाद वह युवक फिर पेड़ के पास आया। "मेरी शादी होने वाली है। मुझे एक घर चाहिए। क्या तुम मुझे एक घर दे सकते हो?" उसने पेड़ से कहा।

पेड़ ने कहा-"घर तो मेरे पास है नहीं। लेकिन तुम मेरी शाखायें काट कर उनसे घर बना लो।" युवक पेड़ की सभी शाखाओं को काटकर ले गया। पेड़ का बस तना बचा रह गया। पेड़ अभी भी खुश था।

बहुत साल बीत गए। लड़का अधेड़ उम्र का आदमी बन गया था।

5 वीर कुँवर सिंह

M1J7KV

" बाबू कुँवर सिंह तेगवा बहादुर
बंगला पर उड़ेला अबीर......."

फाल्गुन माह के प्रारंभ होते ही इस तरह के गीत अक्सर बिहार के विभिन्न क्षेत्रों में सुनाई पड़ने लगते हैं। यह गीत बाबू कुँवर सिंह की शौर्य गाथा का प्रतीक है। उनके जीवन से संबंधित आज भी कुछ ऐसी बातें प्रचलित हैं, जिन पर सहसा किसी को विश्वास नहीं होता। शायद हम भी विश्वास नहीं कर पाएँ।

एक समय की बात है। अंग्रेजी फौज बाबू कुँवर सिंह का पीछा करते हुए गंगा नदी के तट पर पहुँच गयी। बाबू कुँवर सिंह नाव से गंगा नदी को पार कर रहे थे। अचानक अंग्रेजों की गोली उनके दाहिने हाथ में लगी। बिना एक क्षण की देरी किए बाबू कुँवर सिंह ने अपनी ही तलवार से उस हाथ को काटकर गंगा मैया को भेंट चढ़ा दी। है न आश्चर्यजनक एवं अविश्वसनीय बात! प्रसिद्ध नाटककार एवं कवि स्व. रामेश्वर सिंह 'कश्यप' ने इसी घटना को कविता के माध्यम से इस प्रकार व्यक्त किया।

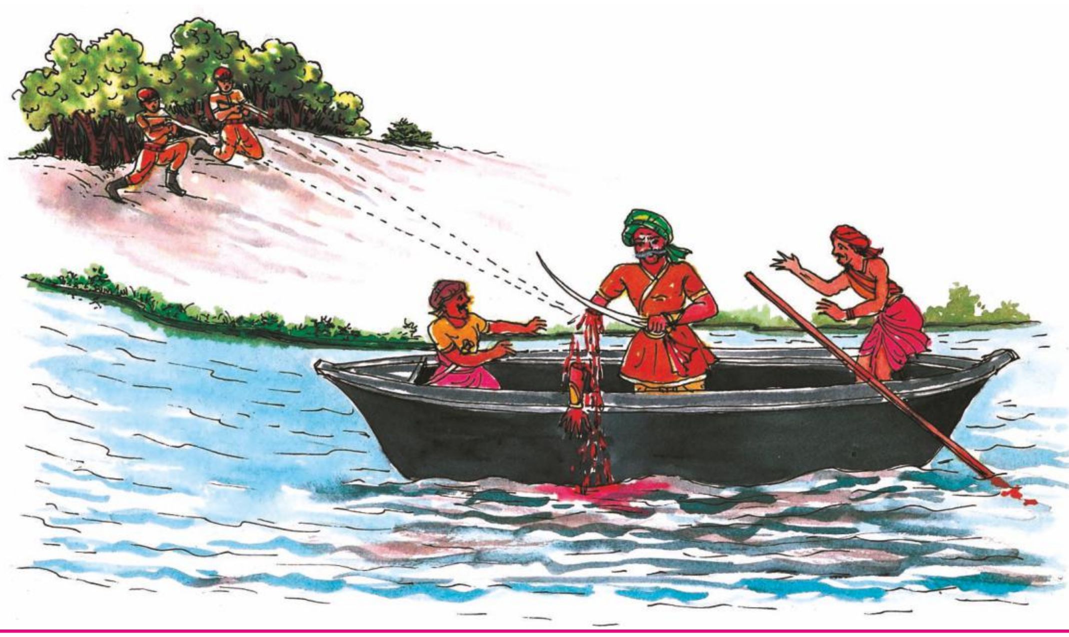

6 गंगा स्तुति

बड़-सुख सार पाओल तुअ तीरे।
छोड़इत निकट नयन बह नीरे।।

कर जोरि विनमओं विमल तरंगे।
पुन दरसन होए, पुनमति गंगे।।

एक अपराध छेमब मोर जानी।
परसल माय पाय तुअ पानी।।

कि करब जप-तप जोग धेयाने।
जनम कृतारथ एकहि सनाने।।

भनई विद्यापति समदओं तोही।
अन्तकाल जनु विसरहु मोही।।

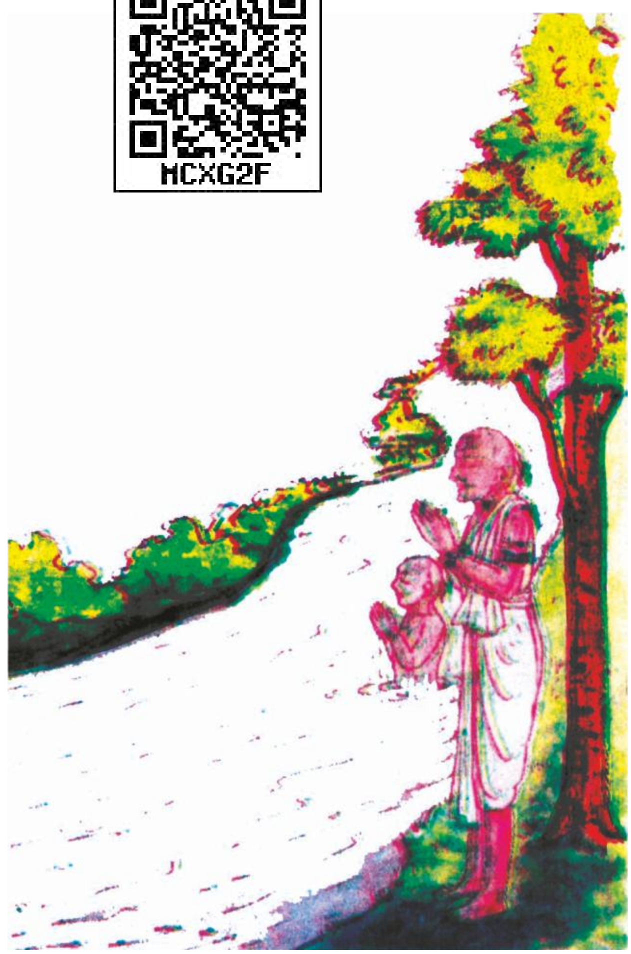

-विद्यापति

शब्दार्थ

दरसन-दर्शन	**सनाने**-स्नान करना	**छेमब**- क्षमा करना	**विमल**-पवित्र
भनई- कहते हैं	**पुनमति**-बार-बार	**समदओं**-प्रार्थना करना	**परसल**-स्पर्श, छूना ।

7 साइकिल की सवारी

MD7C43

भगवान ही जानता है कि जब मैं किसी को साइकिल की सवारी करते या हारमोनियम बजाते देखता हूँ तब मुझे अपने ऊपर कैसी दया आती है। सोचता हूँ, भगवान ने ये दोनों विद्याएँ भी खूब बनाई हैं। एक से समय बचता है, दूसरी से समय कटता है। मगर तमाशा देखिए, हमारे प्रारब्ध में कलियुग की ये दोनों विद्याएँ नहीं लिखी गई। न साइकिल चला सकते हैं, न बाजा ही बजा सकते हैं। पता नहीं, कब से यह धारणा हमारे मन में बैठ गई है कि हम सब कुछ कर सकते हैं, मगर ये दोनों काम नहीं कर सकते।

शायद 1932 की बात है कि बैठे-बैठे ख्याल आया, चलो साइकिल चलाना सीख लें। और इसकी शुरुआत यों हुई कि हमारे लड़के ने चुपचुपाते में यह विद्या सीख ली और हमारे सामने से सवार होकर निकलने लगा। अब आप से क्या कहें कि लज्जा और घृणा के कैसे-कैसे ख्याल हमारे मन में उठे। सोचा, क्या हमीं जमाने भर में फिसड्डी रह गए हैं। सारी दुनिया चलाती है, जरा-जरा से लड़के चलाते हैं, मूर्ख और गँवार चलाते हैं, हम तो परमात्मा की कृपा से फिर भी पढ़े-लिखे हैं। क्या हमीं नहीं चला सकेंगे? आखिर इसमें मुश्किल क्या है? कूदकर चढ़ गए और ताबड़-तोड़ पाँव मारने लगे। और जब देखा कि कोई राह में खड़ा है तब टन-टन करके घंटी बजा दी। न हटा तो क्रोधपूर्ण आँखों से उसकी तरफ देखते हुए निकल गए। बस, यही तो सारा गुर है इस लोहे की सवारी का! कुछ ही दिनों में सीख लेंगे। बस महाराज! हमने निश्चय कर लिया कि चाहे जो हो जाए, परवाह नहीं।

दूसरे दिन हमने अपने फटे-पुराने कपड़े तलाश किए और उन्हें ले जाकर श्रीमतीजी के सामने पटक दिया कि इनकी जरा मरम्मत तो कर दो।

श्रीमती जी ने हमारी तरफ अचरज भरी दृष्टि से देखा और कहा, "इन कपड़ों में अब जान ही कहाँ है जो मरम्मत करूँ! इन्हें तो फेंक दिए थे। आप कहाँ से उठा लाए? वहीं जाकर डाल आइए।"

हमने मुस्कुराकर श्रीमती जी की तरफ देखा और कहा, "तुम हर समय बहस न किया करो। आखिर मैं इन्हें ढूँढ़-ढाँढ़कर लाया हूँ तो ऐसे ही तो नहीं उठा लाया,कृपा करके इनकी मरम्मत कर डालो।"

मगर श्रीमती जी बोलीं, "पहले बताओ, इनका क्या बनेगा?"

हम चाहते थे कि घर में किसी को कानों-कान ख़बर न हो और हम साइकिल सवार बन जाएँ। और इसके बाद जब इसके पंडित हो जाएँ तब एक दिन ज़हाँगीर के मक़बरे को जाने का निश्चय करें। घरवालों को ताँगे में बिठा दें और कहें, "तुम चलो, हम दूसरे ताँगे में आते हैं।" जब वे चले जाएँ तब

8 बचपन के दिन

HDG85Q

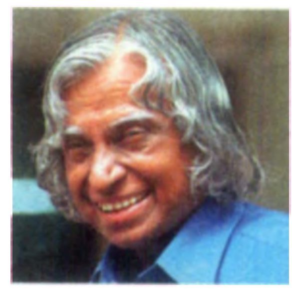

मेरा जन्म तमिलनाडु के रामेश्वरम् कस्बे में एक मध्यमवर्गीय तमिल परिवार में हुआ था। मेरे पिता जैनुलाबदीन की कोई बहुत अच्छी औपचारिक शिक्षा नहीं हुई थी और न ही वे कोई बहुत धनी व्यक्ति थे। इसके बावजूद वे बुद्धिमान थे और उनमें उदारता की सच्ची भावना थी। मेरी माँ, आशियम्मा, उनकी आदर्श जीवनसंगिनी थीं। हम लोग अपने पुश्तैनी घर में रहते थे। रामेश्वरम् की मस्जिदवाली गली में बना यह घर पक्का और बड़ा था।

बचपन में मेरे तीन पक्के मित्र थे- रामानंद शास्त्री, अरविंदन और शिवप्रकाशन। जब मैं रामेश्वरम् की प्राथमिक पाठशाला में पाँचवीं कक्षा में था तब एक नये शिक्षक हमारी कक्षा में आए। मैं टोपी पहना करता था, जो मेरे मुसलमान होने का प्रतीक था। कक्षा में मैं हमेशा आगे की पंक्ति में जनेऊ पहने रामानंद के साथ बैठा करता था। नये शिक्षक को एक हिंदू लड़के का मुसलमान लड़के के साथ बैठना अच्छा नहीं लगा। उन्होंने मुझे पीछे वाली बेंच पर चले जाने को कहा। रामानंद भी मुझे पीछे की पंक्ति में बैठाए जाते देख काफी उदास नजर आ रहा था। पाठशाला की छुट्टी होने पर हम घर गए और सारी घटना अपने घरवालों को बताई। यह सुनकर रामानंद के पिता लक्ष्मण शास्त्री (जो रामेश्वरम् मंदिर के मुख्य पुजारी थे) ने उन शिक्षक महोदय को बुलाया और कहा कि उन्हें निर्दोष बच्चों के दिमाग में इस प्रकार की सामाजिक असमानता एवं सांप्रदायिकता का विष नहीं घोलना चाहिए। शिक्षक महोदय ने अपने किए व्यवहार पर न केवल दुख व्यक्त किया, बल्कि लक्ष्मण शास्त्री के कड़े रुख एवं धर्मनिरपेक्षता में उनके विश्वास से शिक्षक में अंतत: बदलाव आ गया।

प्राथमिक पाठशाला में मेरे विज्ञान शिक्षक शिव सुब्रह्मण्यम् अय्यर कट्टर ब्राह्मण थे, लेकिन वे कुछ-कुछ रूढ़िवाद के खिलाफ हो चले थे। वे मेरे साथ काफी समय बिताते थे और कहा करते थे, " कलाम, मैं तुम्हें ऐसा बनाना चाहता हूँ कि तुम बड़े शहरी लोगों के बीच एक उच्च शिक्षित व्यक्ति के रूप में पहचाने जाओ।"

एक दिन उन्होंने मुझे अपने घर खाने पर बुलाया। उनकी पत्नी इस बात से बहुत ही परेशान थीं कि उनकी रसोई में एक मुसलमान को भोजन पर आमंत्रित किया गया है। उन्होंने अपने रसोईघर के अंदर मुझे खाना खिलाने से साफ इनकार कर दिया। अय्यर जी ने मुझे फिर अगले सप्ताह रात के खाने

9 वर्षा बहार

MDQ47D

वर्षा बहार सबके, मन को लुभा रही है
नभ में छटा अनूठी, घनघोर छा रही है।

बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे हैं
पानी बरस रहा है, झरने भी बह रहे हैं।

चलती हवा है ठण्डी, हिलती हैं डालियाँ सब
बागों में गीत सुन्दर, गाती है मालिनें अब।

तालों में जीव जलचर, अति हैं प्रसन्न होते,
फिरते लखो पपीहे, हैं ग्रीष्म ताप खोते।

करते हैं नृत्य वन में, देखो ये मोर सारे,
मेढक लुभा रहे हैं, गाकर सुगीत प्यारे।

खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है,
बागों में खूब सुख से, आमोद छा रहा है।

चलते कतार बाँधे, देखो ये हंस सुन्दर,
गाते हैं गीत कैसे, लेते किसान मनहर।

इस भाँति है अनोखी, वर्षा बहार भू पर,
सारे जगत की शोभा, निर्भर है इसके ऊपर।

–मुकुटधर पाण्डेय

10 कुंभा का आत्मबलिदान

HDYZ91

आज़ादी किसे प्रिय नहीं होती? मनुष्यों की तो बात ही क्या, पशु-पक्षी भी पराधीन रहना पसंद नहीं करते। लेकिन कभी-कभी इस प्रिय आज़ादी की रक्षा के लिए प्राण भी न्यौछावर करने पड़ते हैं।

राजपूतों की छोटी-सी रियासत बूँदी। वहाँ के वासी थे आज़ादी के परवाने, हाड़ा जाति के राजपूत। परम वीर, नितांत स्वाभिमानी। अपनी मातृभूमि की आन-बान के लिए हरदम मर-मिटने को तैयार।

लेकिन शीघ्र ही उनकी वीरता की परीक्षा की घड़ी आ पहुँची। चित्तौड़ के महाराणा ने बूँदी को अपनी प्रचंड सैन्य शक्ति के बल पर अपने अधीन करना चाहा। बूँदी के हाड़ा राजपूतों ने डटकर युद्ध किया। राणा को इस युद्ध में मुँह की खानी पड़ी।

बूँदी की छोटी-सी रियासत के उन जाँबाज़ सपूतों ने चित्तौड़ के शक्तिशाली राणा को धूल चटा दी। इस अपमानजनक पराजय से राणा तिलमिला उठे। वे क्रोध से आग-बबूला होकर प्रतिज्ञा कर बैठे, "जब तक बूँदी पर अपना झंडा नहीं फहरा दूँगा, तब तक एक बूँद पानी भी नहीं पीऊँगा।"

बूँदी छोटा-सा राज्य सही, पर उसे चुटकियाँ बजाते तो जीता नहीं जा सकता था। जल्दबाजी में बिना पूरी तैयारी किए युद्ध करने पर चित्तौड़ को फिर पराजय का मुँह देखना पड़ता। पूरी तैयारी और युद्ध में काफी समय लगने की संभावना थी।

ऐसी स्थिति में राणा की प्रतिज्ञा का क्या हो? राणा अपनी प्रतिज्ञा से तिल भर भी डिगने को तैयार न थे। सोच-विचार के बाद एक मंत्री को यह उपाय सूझा कि बूँदी का एक नकली किला बनाया जाए और राणा उसे जीतकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करें। फिर अन्न-जल ग्रहण कर लें। बाद में भली-भाँति तैयारी करके बूँदी का असली किला जीता जाए।

यह उपाय सबको पसंद आया। फिर तो तुरंत एक मैदान में बूँदी का नकली किला बनाया जाने लगा। तभी चित्तौड़ की सेना का एक हाड़ा सैनिक जंगल से शिकार खेलकर लौटा। किला बनते

11 कबीर के दोहे

HE8VAN

काल्ह करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करेगा कब।।

साँईं इतना दीजिए, जामे कुटुम समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय।।

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन साबुन पानी बिना, निरमल करे सुभाय।।

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।

सोना, सज्जन, साधुजन, टूटे जुरै सौ बार।
दुर्जन, कुंभ-कुम्हार कै, एकै धका दरार।।

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय।।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलया कोय।
जो दिल खोजा आपनो, मुझ सा बुरा न कोय।।

– कबीर

शब्दार्थ

बहुरि – दुबारा
साँईं – ईश्वर, भगवान
कुटुम – सगा-संबंधी
नियरे – पास, निकट
आखर–अक्षर
मुआ–मर गया
निन्दक–निन्दा करने वाला
म्यान–तलवार रखने का खोल

12 जन्म-बाधा

बबलू ने ही यह लीड फेंकी होगी; झाड़ू लगाते समय उसे खाट के नीचे मिली थी। अभी पूरी तरह खत्म भी नहीं हुई कि फेंक दी! ऐसी ही फिजूल-खर्चियों पर पप्पा नाराज होते हैं।

खैर, जाने दो, अपना तो काम ही बना। कागज और लिफाफा पप्पा के झोले से निकाल ही चुकी हूँ; उनको पता नहीं चला, नहीं तो जरूर पूछते।

अब जल्दी लिख लेना है मुझे। देर करूँगी तो फिर मौका नहीं मिलेगा। अभी माँ की आँख लगी है; कुछ देर तो नहीं ही जगेगी। छोटकी भी माँ का दूध चूसते-चूसते सो गई है। वह अगर जाग गयी तो आफत है; उसे लादे फिरना होगा।

क्या लिखूँ? कैसे शुरू किया जाता है?... अच्छा लिख देती हूँ... प्यारे प्रधान... ऊँह! यह प्यारे-व्यारे क्या लिखना! वह कोई बच्चे थोड़े ही हैं जो! तब ...?

परम प; प में कौन-सा उ लगेगा? बड़ा या छोटा? माँ को जगाकर पूछूँ? उहँ, उसे भी आता होगा? और वह जग गयी तो लिखना ही नहीं होगा। लिख देती हूँ कुछ भी।

13 शक्ति और क्षमा

क्षमा, दया, तप, त्याग, मनोबल
सबका लिया सहारा,
पर नर-व्याघ्र, सुयोधन तुमसे
कहो कहाँ, कब हारा?
क्षमाशील हो रिपु समक्ष
तुम हुए विनत जितना ही,
दुष्ट कौरवों ने तुमको
कायर समझा उतना ही।
क्षमा शोभती उस भुजंग को
जिसके पास गरल हो,
उसको क्या, जो दंतहीन,
विषहीन, विनीत, सरल हो।
तीन दिवस तक पंथ माँगते
रघुपति सिन्धु किनारे,
बैठे पढ़ते रहे छंद
अनुनय के प्यारे-प्यारे।

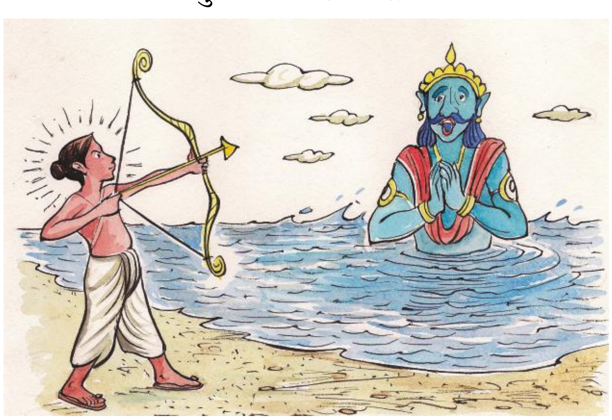

उत्तर में जब एक नाद भी
उठा नहीं सागर से;
उठी अधीर धधक पौरुष की
आग राम के शर से।
सिन्धु देह धर 'त्राहि-त्राहि'
करता आ गिरा शरण में,
चरण पूज, दासता ग्रहण की
बँधा मूढ़ बंधन में।

14 हिमशुक

MF1IFL

बहुत समय पहले अवध में एक राजा राज्य करता था। उसके तीन लड़के थे। तीनों बहुत पढ़े-लिखे, बुद्धिमान और गुणी थे।

एक दिन राजा ने अपने तीनों राजकुमारों को परीक्षा लेने के लिए बुलाया। वह जानना चाहता था कि किसी दोषी को सज़ा देने के मामले में उन तीनों के क्या विचार हैं।

"मान लो," उसने कहा, " अगर मैं अपने जीवन और सम्मान की रक्षा की जिम्मेदारी किसी को सौंप दूँ और वह विश्वासघाती निकले तो उसे क्या सज़ा दी जानी चाहिए?"

सबसे बड़े लड़के ने कहा, "ऐसे आदमी की गरदन फौरन धड़ से अलग कर देनी चाहिए।"

दूसरे लड़के ने कहा, "मेरा भी यही विचार है। ऐसे आदमी को मृत्युदंड ही मिलना चाहिए। उसके साथ किसी तरह की दया नहीं दिखाई जानी चाहिए।"

तीसरा लड़का चुप बैठा रहा।

"क्या बात है, मेरे बेटे?" राजा ने उससे पूछा, "तुम कुछ नहीं बोले, तुम्हारा क्या विचार है?"

"महाराज," छोटे राजकुमार ने कहा, "यह सच है कि ऐसे कुसूर की सज़ा मौत के सिवा और कुछ नहीं हो सकती। लेकिन सज़ा देने से पहले यह बात साफ-साफ और पूरी तरह से साबित हो जानी चाहिए कि वह सचमुच ही दोषी है।"

"यानी, तुम्हारे विचार से ऐसा न किया गया तो निर्दोष आदमी भी मारा जा सकता है।" राजा ने पूछा।

"हाँ,"राजकुमार ने जवाब दिया, "ऐसा हो सकता है। उदाहरण के लिए मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ।"

ऐसा कहकर राजकुमार ने यह कहानी सुनाई।

विदर्भ देश के राजा के पास एक अनोखा तोता था। उस तोते का नाम हिमशुक था। वह महल में पालतू पक्षी की तरह रहता था। हिमशुक बड़ा चतुर था। वह कई भाषाओं में बात कर सकता था। बुद्धिमान इतना था कि अक्सर राजा भी महत्त्वपूर्ण मामलों में उसकी राय लिया करता था।

हिमशुक पिंजरे में नहीं रहता था। वह अपनी इच्छा के अनुसार आज़ादी से घूमता रहता था। एक

13 शक्ति और क्षमा

क्षमा, दया, तप, त्याग, मनोबल
सबका लिया सहारा,
पर नर-व्याघ्र, सुयोधन तुमसे
कहो कहाँ, कब हारा?
क्षमाशील हो रिपु समक्ष
तुम हुए विनत जितना ही,
दुष्ट कौरवों ने तुमको
कायर समझा उतना ही।
क्षमा शोभती उस भुजंग को
जिसके पास गरल हो,
उसको क्या, जो दंतहीन,
विषहीन, विनीत, सरल हो।
तीन दिवस तक पंथ माँगते
रघुपति सिन्धु किनारे,
बैठे पढ़ते रहे छंद
अनुनय के प्यारे-प्यारे।

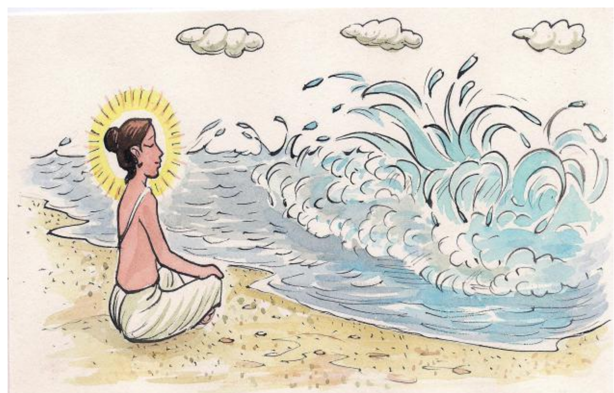

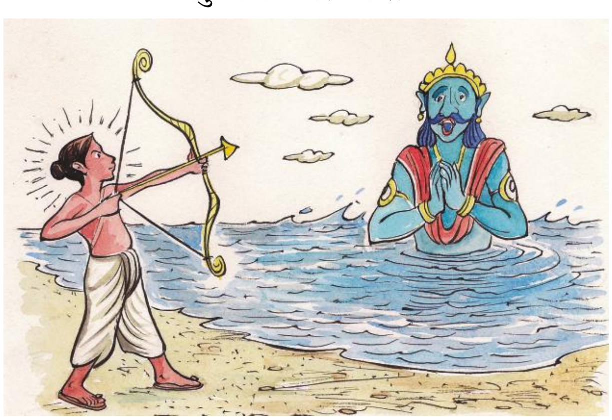

उत्तर में जब एक नाद भी
उठा नहीं सागर से;
उठी अधीर धधक पौरुष की
आग राम के शर से।
सिन्धु देह धर 'त्राहि-त्राहि'
करता आ गिरा शरण में,
चरण पूज, दासता ग्रहण की
बँधा मूढ़ बंधन में।

14 हिमशुक

MF1IFL

बहुत समय पहले अवध में एक राजा राज्य करता था। उसके तीन लड़के थे। तीनों बहुत पढ़े-लिखे, बुद्धिमान और गुणी थे।

एक दिन राजा ने अपने तीनों राजकुमारों को परीक्षा लेने के लिए बुलाया। वह जानना चाहता था कि किसी दोषी को सज़ा देने के मामले में उन तीनों के क्या विचार हैं।

"मान लो," उसने कहा, " अगर मैं अपने जीवन और सम्मान की रक्षा की जिम्मेदारी किसी को सौंप दूँ और वह विश्वासघाती निकले तो उसे क्या सज़ा दी जानी चाहिए?"

सबसे बड़े लड़के ने कहा, "ऐसे आदमी की गरदन फौरन धड़ से अलग कर देनी चाहिए।"

दूसरे लड़के ने कहा, "मेरा भी यही विचार है। ऐसे आदमी को मृत्युदंड ही मिलना चाहिए। उसके साथ किसी तरह की दया नहीं दिखाई जानी चाहिए।"

तीसरा लड़का चुप बैठा रहा।

"क्या बात है, मेरे बेटे?" राजा ने उससे पूछा, "तुम कुछ नहीं बोले, तुम्हारा क्या विचार है?"

"महाराज," छोटे राजकुमार ने कहा, "यह सच है कि ऐसे कुसूर की सज़ा मौत के सिवा और कुछ नहीं हो सकती। लेकिन सज़ा देने से पहले यह बात साफ-साफ और पूरी तरह से साबित हो जानी चाहिए कि वह सचमुच ही दोषी है।"

"यानी, तुम्हारे विचार से ऐसा न किया गया तो निर्दोष आदमी भी मारा जा सकता है।" राजा ने पूछा।

"हाँ,"राजकुमार ने जवाब दिया, "ऐसा हो सकता है। उदाहरण के लिए मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ।"

ऐसा कहकर राजकुमार ने यह कहानी सुनाई।

विदर्भ देश के राजा के पास एक अनोखा तोता था। उस तोते का नाम हिमशुक था। वह महल में पालतू पक्षी की तरह रहता था। हिमशुक बड़ा चतुर था। वह कई भाषाओं में बात कर सकता था। बुद्धिमान इतना था कि अक्सर राजा भी महत्त्वपूर्ण मामलों में उसकी राय लिया करता था।

हिमशुक पिंजरे में नहीं रहता था। वह अपनी इच्छा के अनुसार आज़ादी से घूमता रहता था। एक

16 बूढ़ी पृथ्वी का दुख

MFJAIH

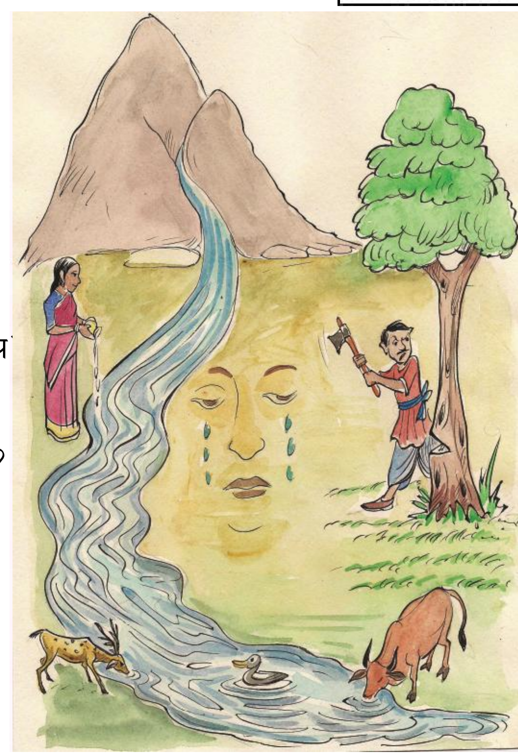

क्या तुमने कभी सुना है
सपनों में चमकती कुल्हाड़ियों के भय से
पेड़ों की चीत्कार?

कुल्हाड़ियों के वार सहते
किसी पेड़ की हिलती टहनियों में
दिखाई पड़े हैं तुम्हें
बचाव के लिए पुकारते हजारों-हजार हाथ

क्या होती है, तुम्हारे भीतर धमस
कटकर गिरता है जब कोई पेड़ धरती पर?

सुना है कभी
रात के सन्नाटे में अँधेरे से मुँह ढाँप
किस कदर रोती हैं नदियाँ?

इस घाट अपने कपड़े और मवेशियाँ धोते
सोचा है कभी कि उस घाट
पी रहा होगा कोई प्यासा पानी
या कोई स्त्री चढ़ा रही होगी किसी देवता को अर्घ्य?

कभी महसूस किया कि किस कदर दहलता है
मौन समाधि लिये बैठा पहाड़ का सीना
विस्फोट से टूटकर जब छिटकता दूर तक कोई पत्थर?
सुनाई पड़ी है कभी भरी दुपहरिया में
हथौड़ों की चोट से टूटकर बिखरते पत्थरों की चीख?

17 सोना

HFT6KJ

सोना की आज अचानक स्मृति हो आने का कारण है। मेरे परिचित स्वर्गीय डा० धीरेन्द्रनाथ वसु की पौत्री सुस्मिता ने लिखा है, ''गत वर्ष अपने पड़ोसी से मुझे एक हिरन मिला था। बीते कुछ महीनों में हम उससे बहुत स्नेह करने लगे हैं, परंतु अब मैं अनुभव करती हूँ कि सघन जंगल से संबद्ध रहने के कारण तथा अब बड़े हो जाने के कारण उसे घूमने के लिए अधिक विस्तृत स्थान चाहिए। क्या कृपा करके आप उसे स्वीकार करेंगी? सचमुच मैं आपकी बहुत आभारी रहूँगी, क्योंकि आप जानती हैं, मैं उसे ऐसे व्यक्ति को नहीं देना चाहती, जो उससे बुरा व्यवहार करे। मेरा विश्वास है, आपके यहाँ उसकी भली-भाँति देखभाल हो सकेगी।''

कई वर्ष पूर्व मैंने निश्चय किया था कि अब हिरन नहीं पालूँगी, परंतु आज उस नियम को भंग किए बिना इस कोमल प्राण जीव की रक्षा संभव नहीं है।

सोना भी इसी प्रकार अचानक आई थी, परंतु वह तब तक अपनी शैशवावस्था भी पार नहीं कर सकी थी। सुनहरे रंग के रेशमी लच्छों की गाँठ के समान उसका कोमल लघु शरीर था। छोटा-सा मुँह और बड़ी-बड़ी पानीदार आँखें। देखती थीं, तो लगता था कि अभी छलक पड़ेंगी। लंबे कान, पतली सुडौल टाँगें, जिन्हें देखते ही उनमें प्रसुप्त गति की बिजली की लहर देखने वालों की आँखों में कौंध जाती थी। सब उसके सरल शिशु रूप से इतने प्रभावित हुए कि किसी चंपकवर्णा रूपसी के उपयुक्त सोना, सुवर्णा, स्वर्णलेखा आदि नाम उसका परिचय बन गए।

मनुष्य मृत्यु को असुंदर ही नहीं, अपवित्र भी मानता है। उसके प्रियतम आत्मीय जन का शव भी उसके निकट अपवित्र, अस्पृश्य तथा भयजनक हो उठता है। जब मृत्यु इतनी अपवित्र और असुंदर है, तब उसे बाँटते घूमना क्यों अपवित्र और असुंदर कार्य नहीं है, यह मैं समझ नहीं पाती।

आकाश में रंग-बिरंगे फूलों की छटाओं के समान उड़ते हुए और वीणा, वंशी मुरज, जलतरंग आदि का वृंदवादन बजाते हुए पक्षी कितने सुंदर जान पड़ते हैं। मनुष्य ने बंदूक उठाई, निशाना साधा और गोली चला दी जिससे कई गाते-उड़ते पक्षी

18 हुएनत्सांग की भारत यात्रा

MG32M7

चीन में सन् 630 के पतझड़ का मौसम था, हुएनत्सांग खुशी से सराबोर होकर सुमेरु पर्वत को देख रहे थे। उन्हें लगा कि दैवी पर्वत सुमेरु महान समुद्र के मध्य में से उभरा। सुमेरु पर्वत सोना, चांदी, रत्नों और जवाहरातों का बना हुआ सुंदर एवं विशाल पर्वत लग रहा था। उन्होंने उस पर चढ़ना चाहा, लेकिन उनके चारों ओर सागर की ऊँची भयंकर लहरों ने उनकी कोशिश नाकामयाब कर दी। उस समय वहाँ कोई जहाज एवं नौका भी नहीं दिखाई दे रही थी। हुएनत्सांग बिना किसी डर के लहरों को पार करते रहे। ठीक उसी समय उनके पैरों के समीप पाषाण-कमल उदित हुआ। जैसे ही वे कमल पर पैर रखते, कमल गायब होकर और दुबारा उनके सामने प्रकट होता। इस तरह वे पाषाण कमल पर पैर रखते हुए उस पवित्र पर्वत तक पहुंच गए। लेकिन वे उसकी चोटी पर न चढ़ सके। जैसे ही उन्होंने साहस बटोरकर कदम आगे बढ़ाने की कोशिश की, वैसे ही एक तेज बवंडर ने आकर उन्हें उठाकर पर्वत की सबसे ऊँची चोटी पर पहुँचा दिया।

आनंद से विभोर होकर हुएनत्सांग की नींद खुली। उन्होंने स्वप्न को एक शुभ शगुन मानकर बुद्ध की जन्मभूमि, भारत की तीर्थ यात्रा प्रारंभ की। वे उसी समय राजधानी छांग-एन से चल पड़े। वे उस समय तक चलते गए जब तक कि लिएंग चाउ ने उन्हें न रोका। उसने हुएनत्सांग से यह प्रार्थना की कि वह कुछ बौद्ध लेखों की व्याख्या कर दें। कारण यह था कि हुएनत्सांग अपनी विद्वता के लिए विख्यात थे।

उस जमाने में चीन के कानून के मुताबिक लोगों को देश छोड़ने की आज्ञा नहीं थी। लेकिन हुएनत्सांग किसी के द्वारा रोके जाने पर न रुकने के लिए दृढ़ संकल्पित थे। वे इस नेक काम में मदद मांगने लिएंग-चाउ के सबसे अधिक श्रद्धास्पद भिक्षु के पास गए। भिक्षु ने उत्साह के साथ उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और हुएनत्सांग के मार्गदर्शन के लिए अपने दो शिष्यों को भेज दिया।

हुएनत्सांग और उसके दोनों साथी दिन में छिपे रहते और रात में यात्रा करते हुए क्वा-चौ पहुँचे। वे यात्रियों और व्यापारियों से भारत जाने के लिए पश्चिमी मार्गों के बारे में पूछा करते थे।

यात्रियों ने कहा "यहां से पचास ली (एक मील में तीन ली होते हैं) की दूरी पर उत्तर दिशा में हु-लु नदी है। उसके पानी में भंवरें पड़ती हैं और बहाव भी इतना तेज है कि उसे नाव के द्वारा पार नहीं किया जा सकता।"

"तब उसे यात्री किस तरह पार करते हैं?" हुएनत्सांग ने कहा, "जरूर कोई रास्ता होगा"।

19 आर्यभट

HSGB3R

आकाश में चमकते सितारे सदा से मनुष्य के लिए आकर्षण के केन्द्र रहे हैं। मानव युगों से यह कल्पना करता रहा है कि वह इन नक्षत्रों के रूप-रंग, आकार और रचना को जान सके। उनकी यात्रा कर, उनके बारे में अनुभव प्राप्त कर सके। यह विचार भी उसे गुदगुदाता रहा है कि किसी-न-किसी नक्षत्र पर उसके जैसे लोग भी बसते होंगे। मानव की इसी जिज्ञासा ने उसे आकाश में विद्यमान नक्षत्रों की खोजबीन करने के लिए प्रेरित किया।

युगों से चले आ रहे परीक्षणों के कारण ही आज मानव धरती पर बैठे-बैठे ही कुछ नक्षत्रों में घटने वाली घटनाओं को जानने में सक्षम हो गया है।

भारत में हजारों वर्ष पूर्व भी ग्रह-नक्षत्रों के विषय में विस्तार से चिन्तन-मनन किया गया। आर्यभट भारत के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने कहा कि पृथ्वी अपने धुरी पर चक्कर लगाती है। उनके अनुसार तारामंडल स्थिर रहता है और पृथ्वी अपनी धुरी पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है। हम भी पृथ्वी के साथ घूमते रहते हैं। आज यह एक वैज्ञानिक तथ्य है पर उस समय लौकिक मत में ऐसी बात करना पाप समझा जाता था क्योंकि धर्म ग्रन्थ भी यही कहते थे कि पृथ्वी स्थिर है।

आर्यभट का जन्म अश्मक प्रदेश में 476ई. में हुआ था। गोदावरी एवं नर्मदा के बीच के क्षेत्र को अश्मक प्रदेश के नाम से जाना जाता था। वे अपने नये विचारों का प्रचार करके लोगों में व्याप्त अन्धविश्वास को दूर करने एवं उत्तर भारत के ज्योतिषियों के विचारों का अध्ययन करने पाटलिपुत्र आये थे। पाटलिपुत्र नगर से थोड़ी दूर एक आश्रम में उनकी वेधशाला थी। जहाँ ताँबे, पीतल और लकड़ी के तरह-तरह के यंत्र रखे थे।

आर्यभट को ज्योतिष सम्राट कहा जाता है पर गणित में भी उन्हें विशेष कुशलता प्राप्त थी। इन विषयों में उन्होंने अनेक पुरानी मान्यताओं का खण्डन कर नवीन मतों की स्थापना की। वे स्वतंत्र विचारों के व्यक्ति थे और किसी भी दबाव में आकर गलत बातों को स्वीकार करना उनके स्वभाव के विरुद्ध था।

आर्यभट ने अपने अनुभवों और विचारों को "आर्यभटीयम्" नामक ग्रन्थ में संकलित किया। इस ग्रन्थ को 'आर्यभटीय' भी कहते हैं। उनकी पुस्तक के एक श्लोक के आधार पर कहा जा सकता है कि आर्यभट उस समय केवल तेईस (23) वर्ष के थे जब यह पुस्तक लिखी गई। है न यह आश्चर्य की बात! क्योंकि इतनी छोटी आयु में धर्म ग्रन्थों और परम्परागत धारणाओं का खण्डन कर, नवीन विचारों और

20 यशस्विनी

मत उसके नभ को छीनो तुम,
मत तोड़ो उसके सपनों को।
वह दान दया की वस्तु नहीं,
वह जीव नहीं वह नारी है।

अगर कर सकते हो कुछ भी तुम,
तो कुछ न करो– यह कार्य करो।
जो चला गया– पर अब जो है,
उसको संवारना आर्य करो।

क्या दादी–नानी–चाची–माँ।
बस यह बनकर है रहने को?
निर्जीव नहीं, वह नारी है
उसे टेरेसा बन जीने दो,
उसे इंदिरा बन जीने दो।

हाँ तोड़ो उस बेड़ी को जरा
जिसमें नफरत की कड़ियाँ हैं
फिर पंखों को खुल जाने दो
उसे कल्पना बन जीने दो,
उसे लता बन जीने दो

पग–नुपूर कंगन–हार नहीं
तुम विद्या से शृंगार करो
तुम खुद अपना सम्मान करो
अपना नारीत्व स्वीकार करो।

–बेबी रानी

21

सिर्फ पढ़ने के लिए

गुरु की सीख

HSZ372

एक दिन गुरु जी अपने शिष्यों को जड़ी-बूटियों की जानकारी देने के लिए किसी जंगल में लेकर जा रहे थे। रास्ते में अवारा कुत्ते भौंकते हुए उनके पीछे आ गए। गुरु और उनका एक शिष्य उनकी ओर ध्यान न देकर चुपचाप अपनी राह पर चलते रहे। पर उनके अन्य शिष्य वहीं रुक गए। वे पत्थर मारकर उन आवारा कुत्तों को भगाने लगे।

उन्हें भगाकर जैसे ही वे आगे बढ़े, अचानक एक बंदर उनके रास्ते में आ गया। वे उसे भी पत्थर मारने लगे। बंदर तब भी वहां से भागा नहीं। वह उन शिष्यों से चिढ़ गया था। बहुत देर तक वे उस बंदर से ही उलझे रहे।

जब जंगल में पहुँचे, तब तक बहुत देर हो चुकी थी। जब वे अपने गुरु के पास आए, गुरु ने उनकी ओर देखा भी नहीं। उनकी अनदेखी करते हुए गुरु ने अपने साथ आए शिष्य से कहा-"वत्स, शाम होनेवाली है। जंगल में अब रुकना ठीक नहीं है, हमें यहाँ से अब शीघ्र जाना होगा।" यह सुनकर अन्य शिष्य हैरान रह गए। जड़ी-बूटियों के बारे में तो गुरु जी ने कुछ बताया ही नहीं था।

उन शिष्यों ने विनम्र भाव से गुरु से कहा-"गुरुजी, आप तो हमें जंगल में जड़ी-बूटियों की जानकारी देने के लिए लाए थे, पर आप तो बिना जानकारी दिए जाने की बात कह रहे हैं।"

गुरु ने कठोरता से कहा- "बच्चों, तुम सही कह रहे हो। पर तुम अभी इस योग्य नहीं हो।"

गुरु की बात को वे समझ नहीं सके । शिष्यों ने पुनः याचना भरे स्वर में कहा-"गुरुजी, आप हम से नाराज क्यों हैं? हमारा दोष क्या है?"

शिष्यों को समझाते हुए गुरु ने कहा-"बच्चों, यदि तुम समय पर जंगल में आ जाते, तो संभवतः मैं तुम्हें जड़ी-बूटियों की जानकारी अवश्य देता। पर तुमने तो अपना सारा समय रास्ते में व्यर्थ की बातों में उलझने में ही गंवा दिया।"

शिष्यों को अपनी गलती का एहसास हो गया था। वे खाली हाथ-मुँह लटकाए कुटिया में वापस आकर अपनी गलती पर पश्चाताप करने लगे।

जबकि वह शिष्य, जो रास्ते में न रुककर गुरु के साथ ही रहा था, अपने साथ कई उपयोगी जड़ी-बूटियाँ जंगल से एकत्रित कर ले आया था।

22

सिर्फ पढ़ने के लिए

समय का महत्व

समय बहुत ही मूल्यवान है, व्यर्थ कभी मत खोना,

HT8Y8P

चला गया तो समय लौटकर, कभी नहीं फिर आता।
सदा समय को खोने वाला, मल-मल हाथ पछताता,
जिसने इसे न माना उसको समय सदा ठुकराता ।
लाख यत्न करने पर भी फिर हाथ न उसके आता,
हो जाता है एक घड़ी के लिए जन्म-भर रोना ।
समय बहुत ही मूल्यवान है, व्यर्थ कभी मत खोना।

धन खो जाता, श्रम करने से फिर मनुष्य है पाता,
स्वास्थ्य बिगड़ जाने पर, उपचारों से है बन जाता।
विद्या खो जाती, फिर भी पढ़ने से है आ जाती,
लेकिन खो जाने से मिलती नहीं समय की थाती ।
जीवन-भर भटको छानो दुनिया का कोना-कोना,
समय बहुत ही मूल्यवान है, व्यर्थ कभी मत खोना।

किया मान आदर जिसने भी, और इसे अपनाया,
जिसने आँका मूल्य उससे इसने है अमर बनाया ।
महापुरुष हो गए विश्व में जितने यश के भागी,
सब जीवन पर्यंत रहे हैं पल-पल के अनुरागी ।
उचित प्रयोग समय का ही है, सफल मनोरथ होना,
समय बहुत ही मूल्यवान है, व्यर्थ कभी मत खोना।

●